'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 अंक 4 4 मई, 2019 कुल पृष्ठ: 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

(माननीय संघ प्रमुख श्री का चित्तौड़गढ़, बाड़मेर, जैसलमेर एवं जोधपुर प्रवास)

'समाज की बात करते हिचकें नहीं'

यदि हमें सामाजिक बनना है तो समाज का काम करते हुए एवं समाज की बात करते हुए कोई हिचक न रखें। यदि हम हिचकते हैं तो सामाजिक हैं ही नहीं। जो सामाजिक है वही देश भक्त है, राष्ट्र भक्त है। हमको कोई राष्ट्रवाद, देशभक्ति या राष्ट्रवाद का पाठ पढाए तो अच्छी बात है लेकिन सावधान रहें, गुमराह न हों और उनसे कहें कि पहले वे तो यह सब बनें। देश क्या होता है, उसके लिए क्या करना चाहिए, इसका जीवंत उदाहरण है हमारी कौम का जीवन। इसलिए इस पक्ष में अज्ञानी और दरिद्र लोग हमें सीख देते हैं यहां तक तो सहनीय है लेकिन वे हमें गलत सिद्ध करने का प्रयत्न न करें। जोधपुर के मारवाड़ राजपूत सभा भवन में लोकसभा चुनावों को लेकर श्री क्षत्रिय युवक संघ की चिंतन बैठक को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि लोग मुझसे अपेक्षा करते हैं कि मैं राजपूत की बात न करूं, कौम की बात न करूं लेकिन मैं समाज और कौम के अलावा कुछ जानता ही नहीं हूं इसलिए इससे इतर क्या बात कर सकता हूं। संघ का संगठन व्यक्ति से प्रारम्भ होता है, व्यक्ति पहले अपने व्यक्तित्व का संगठन करता है, तदुपरांत आगे का संगठन संभव है। संघ किसी के विरुद्ध संगठन नहीं है, कोई मांग भी नहीं करता, अधिकारों की नहीं उत्तरदायित्वों की बात करता है, ऐसे में उसे कोई संकुचित कहता है तो मैं मानता हूं कि ऐसा कहने वालों से अधिक संकुचित कोई नहीं। जब भी आवश्यकता हुई राजपूत राष्ट्र के लिए उपस्थित हुए हैं। लेकिन दुर्भाग्य है देश का कि अंग्रेजों की छावनियां लूटने वालों को तो ढग एवं डाकू कहा गया और सड़कों पर दौड़ने वालों को स्वंत्रता सेनानी कहकर सम्मान दिया गया। उन्होंने कहा कि हम यहां राजनीतिक दृष्टिकोण से नहीं बल्कि विशुद्ध रूप से सामाजिक दृष्टिकोण से आए हैं। मैं किसी व्यक्ति के लिए वोट देने का प्रचार करने नहीं जाता। लेकिन समाज का कोई व्यक्ति खड़ा होता है तो जरूर जाना चाहता हूं चाहे वह किसी भी पार्टी का हो। समाज का जो भी व्यक्ति टिकट लेकर आया है वह जीतना चाहिए यह हमारा दायित्व है और इसी सामाजिक दायित्व के लिए चित्तौड़, बाड़मेर, जैसलमेर होता हुआ यहां आया हूं। समाज के सभी संगठनों को एकजुट होकर इसका प्रयास करना चाहिए। समाज के विभिन्न संगठन एक-दूसरे के विरुद्ध नहीं है, हां अपनी-अपनी सोच के अनुसार उनका काम करने का तरीका अलग-अलग हो सकता है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

'सॉफ्ट टारगेट' बनने से बचें

गीता में भगवान श्री कृष्ण द्वारा बताए क्षत्रिय के सात गुणों में धैर्य और दक्षता भी है। धैर्यवान एवं दक्ष व्यक्ति कभी किसी षड्यंत्र का शिकार नहीं बनता लेकिन हम तो दिन प्रतिदिन किसी न किसी षड्यंत्र के शिकार बनते जा रहे हैं। षड्यंत्रकारियों के लिए हम 'सॉफ्ट टार्गेट' बन गए हैं और दिन प्रतिदिन हमें लक्ष्य बनाकर आसानी से षड्यंत्रों को अंजाम दिया जा रहा है। हम भावनाओं के अतिरेक या श्रेष्ठता के अहंकार से इतने पीड़ित हैं कि कोई भी हमारी इस दुःखती रग पर हाथ रखता है, हम फुफकारते हैं और सामने वाला हमारी फुफकार को जहरीली सिद्ध कर हमें खलनायक घोषित कर देता है। कुछ ऐसा ही घटित हो रहा है आजकल हमारे साथ। हम शिकायत करते हैं कि सामने वाला आकर हमें भड़काने की कार्रवाई करता है, हमारे को उकसाता है, हमारे अहंकार को चोटिल करता है तब प्रतिक्रिया स्वरूप कोई घोड़ी से उतारने की, किसी को अपमानित करने वाली भाषा बोलने की घटना घटित होती है। आपकी बात शत प्रतिशत सही है। निश्चित रूप से हमारे साथ षड्यंत्र होता है लेकिन कोई हमें भड़काता है और हम भड़क जाते हैं? कोई हमें उकसाता है और हम उकसावे में आ जाते हैं?

(शेष पृष्ठ 6 पर)

श्री राजपूत सभा जयपुर के चुनाव संपन्न

श्री राजपूत सभा जयपुर की कार्यकारिणी के त्रिवार्षिक चुनाव 14 अप्रेल को संपन्न हुए जिसमें 2019 से 2022 तक के लिए कार्यकारिणी के चयन हेतु मतदान किया गया। इन चुनावों में 3156 सदस्यों ने मतदान किया। पूर्व जिला एवं सेशन न्यायाधीश मोतीसिंह राठौड़ की देखरेख में संपन्न चुनाव प्रक्रिया में 15 अप्रेल को मतगणना के पश्चात 6 पदाधिकारियों एवं 15 कार्यकारिणी सदस्यों को निर्वाचित घोषित किया गया। निर्वाचित पदाधिकारियों में गिरिराजसिंह लोटवाड़ा कार्यकारी सभापति, प्रमोदसिंह खानपुर उप सभापति, बलबीरसिंह हाथोज महामंत्री, धीरसिंह शेखावत संगठन मंत्री, मोहन सिंह बगड़ सहमंत्री, जब्बरसिंह कोषाध्यक्ष एवं अजयपालसिंह, अजयवीरसिंह, जोगेन्द्रसिंह सावरदा, नटवरसिंह शेखावत, नत्थूसिंह सूरौठ, प्रतापसिंह राणावत, पृथ्वीसिंह कालीपहाड़ी, प्रद्युम्नसिंह शेखावत, रघुराजसिंह शेखावत, रामसिंह पिपराली, विक्रमसिंह दिशनाऊ, विरेन्द्र प्रताप सिंह, विरेन्द्रपाल सिंह, सुमन कंवर बाबरा व हेमेन्द्र कुमारी दुदु सदस्य के रूप में शामिल हैं।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

अपने विद्यार्थी जीवन में पूज्य तनसिंह जी ने सदैव विपरीत आर्थिक परिस्थितियों को झेला। पिलानी में पढ़ते समय उन्होंने दैन्यता का बड़ी निकटता से देखा लेकिन उतनी ही निकटता से इससे संघर्ष किया। छात्रावास में रहते रसोईये का खर्च वहन करने में सक्षम नहीं थे इसलिए हाथ से रोटी बनाई। फिर भी स्वयं का एवं स्वयं जैसे साथियों का खर्च चलाने के लिए पैसे की कमी को दूर करने के लिए वाचनालय में नौकरी की। अमीर सहपाठियों को दांतुन बेचे, छात्रावास की खाली पड़ी भूमि में चौदह क्यारियां तैयार कर छात्रावास की मैस के लिए साग सब्जी उगाकर बेची लेकिन फिर भी अपने पूरे समूह की आवश्यकता को पूरा करने में कठिनाई ही महसूस करते रहे। परीक्षा निकट आने पर परीक्षा की फीस भरने को पैसे नहीं थे। सोचा संस्था के मालिक बिरला जी से सहायता मांगी जाए लेकिन उसके लिए छात्रावास के संचालक के माध्यम से सेठजी को मिन्नतों एवं प्रशंसा भरा पत्र लिखा जाने का रिवाज था जिससे 5-10 रुपए की सहायता मिल जाती थी। लेकिन पूज्य श्री को इससे अधिक रूपयों की आवश्यकता थी। उन्होंने संचालक को माध्यम बनाए बिना सेठजी के नाम सीधा पत्र लिखा एवं उसमें साधारण शब्दों में 60 रुपए उधार देने की मांग की जिन्हें कमाने लायक होने पर वापिस लौटाने का वादा किया। सेठजी पूज्यश्री की सीधी सपाट भाषा एवं वापिस लौटाने की साहुकारी बात से प्रभावित हुए एवं मुनीमों को 60 रुपए देने का आदेश भिजवाया। पूज्य श्री ने 15 वर्षों बाद वे 60 रुपए मनिआर्डर द्वारा धन्यवाद सहित सेठजी को अदा कर दिए। इस प्रकार का साहुकारी पूर्ण व्यवहार उनके पूरे जीवन में बना रहा। उन्होंने केवल अर्थ के लेन-देन में ही साहुकारी नहीं बरती बल्कि उनके जीवन का सम्पूर्ण व्यवहार इसी साहुकारी से ओतप्रोत था। उनका कहना था कि यदि मुझे किसी ने एक गिलास पानी भी पिलाया है तो मुझे उसके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए एवं अवसर मिलने पर कृतज्ञता ज्ञापित भी करनी चाहिए। इसी का परिणाम था कि उन्होंने उनके ही पनपाए लोगों के विरोध को भी सहर्ष पीकर बदले में अमृत का ही प्रसार किया। महापुरुषों का जीवन प्रारम्भ से ही सामान्य लेनदेन से ऊपर होता है। वे सदैव यह याद रखते हैं कि उन्हें किस-किस ने दिया है लेकिन यह कभी याद नहीं रखते कि उन्होंने कितना दिया है। पूज्य श्री ऐसे ही महापुरुष थे उन्हें जिसने जितना सात्विक दिया उसे गुणित कर लौटाया और जो भी आसात्विक मिला उसे शंकर की तरह पी गए।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(5) Certified financial Planner (CFP) : सर्टिफाईड फाइनेन्सियल प्लानर एक प्रतिष्ठित तथा उच्च स्तरीय कैरियर विकल्प है। इनका मुख्य कार्य निवेश, बीमा, कर, रिटायरमेंट, रियल एस्टेट आदि क्षेत्रों में सामरिक (Tactical) सलाह व योजना को प्रस्तुत करना है। CFP सर्टिफिकेशन जिसे CFPCM के नाम से जाना जाता है, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्य फाइनेन्सियल प्लानिंग क्वालिफिकेशन है। FPSB India भारत में CFPCM प्रदान करने वाली शीर्ष संस्था है, जो FPSB, Denrer, USA से संबद्ध है। CFPCM सर्टिफिकेशन प्राप्त करने हेतु दो मार्ग (Pathway) उपलब्ध है।

(i) Regular Pathway : इसके लिए न्यूनतम योग्यता 10वीं कक्षा उत्तीर्ण है। अभ्यर्थी को सर्वप्रथम

वेबसाइट पर स्वयं को पंजीकृत (Register) करना होता है। इसके पश्चात् अभ्यर्थी को निम्न पांच परीक्षाएं उत्तीर्ण करनी होती है :

(a) Risk analysis & Insurance Planning.
(b) Retirement Planning & Employee Benefits.
(c) Investment Planning.
(d) Tax Planning & Estate Planning.
(e) Advance Financial Planning.

उपरोक्त में से प्रथम चार परीक्षाएं NSE द्वारा NCFM प्लेटफॉर्म पर ऑनलाईन आयोजित की जाती है, जबकि अन्तिम परीक्षा FPSB द्वारा आयोजित की जाती है।

(ii) Challenge Status Pathway : इसके लिए अभ्यर्थी के पास CA इण्टरमीडिएट लेवल, CFA (US), ICWA, CAIIB, CS, LLB, Phd, M.Phill, PG, Licentiate/Associate/Fellowship & FLMI From LOMA, Civil Service Exanination by UPSC में से कोई एक योग्यता होनी चाहिए। इसमें अभ्यर्थी को केवल Advanced Finanical Planning परीक्षा को उत्तीर्ण करना होता है। Regular Pathway के अभ्यर्थी को CFPCM Exam. से पूर्व अथवा पश्चात् तीन वर्ष (स्नातक हेतु) अथवा 5 वर्ष (गैर स्नातक हेतु) का अनुभव प्राप्त करना अनिवार्य है। Challenge Status Pathway के अभ्यर्थी के लिए 3 वर्ष का वित्तीय अथवा 5 वर्ष का गैर वित्तीय कार्य अनुभव होना चाहिए।

क्रमशः

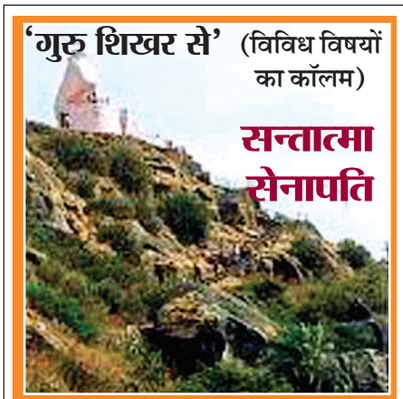

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

भारतीय थल सेना के लेफ्टिनेंट जनरल हनुतसिंह राठौड़ जसोल की यह लेख परिचय प्रस्तुति करता है। राव मल्लीनाथ जैसे मालाणी के सूरमा सन्त के आप वंशज थे। मारवाड़ के मालाणी परगने का जसौल ठिकाना महेचा राठौड़ सरदारों की जागीरदारी का हिस्सा रहा है। इस परिवार ने शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न उच्च पदों पर रहकर अपना कर्त्तव्य पालन किया है। जनरल साहब का जन्म 6 जुलाई 1933 को हुआ। आपके पिताश्री अर्जुनसिंह ने भी स्वतंत्रता से पूर्व जोधपुर लांसर्स एवं कच्छावा हॉर्स में सेवाएं दी। पूर्व विदेश, वित्त एवं रक्षा मंत्री जसवंतसिंह एवं पूर्व आई.ए.एस.फतेहसिंह (गुजरात के पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव) आपके चचेरे भाई हैं। आपकी स्कूली शिक्षा कर्नल बाउंस स्कूल देहरादून से हुई। आपने आई.एम.ए. से प्रशिक्षण लेने के बाद 1952 पूना होर्स में कमीशन लिया। आपका अध्यात्म के प्रति झुकाव बचपन से ही था। आप पूजा पाठ एवं ध्यान साधना पर पूरी समझ रखते थे। आप सदैव सद्गुरुदेव की खोज में रहते थे। अन्ततः 1968 में देहरादून में श्री शिवबाला योगी से गुरु दीक्षा ली। आप बाला सती माता जी (बिलाड़ा के पास जोधपुर) के आश्रम भी समय-समय पर आते रहते थे। जुलाई 1991 में सेना से सेवानिवृति के बाद आप शिव आश्रम देहरादून में अधिकांश समय रहते थे। आप आजन्म अविवाहित रहे। सेना में आप जनरल हनूत गुरुदेव के नाम से विख्यात थे। भारत के कई सेनापति, अफसर एवं सैनिक आपकी बहादुरी, ईमानदारी एवं अध्यात्म के कायल थे। उनके ध्यान में बैठने एवं पूजा के समय उनके अधिकारी भी उन्हें कभी भी व्यवधान नहीं देते थे। युद्ध के मोर्चों पर भी आप अपने गुरु का चित्र साथ रखते थे तथा समय पर अपनी साधना भी कर लिया करते थे।

1971 की भारत पाक लड़ाई में आपकी कमान में पूना होर्स शकरगढ़ बल्ज के मोर्चे पर तैनात थी। वहां आपके नेतृत्व में पाक आर्म्ड ब्रिगेड को उनकी सीमा के अन्दर जाकर बखूबी करारा जवाब दिया तथा उनके 48 टैंक खत्म कर दिए। उनके युवा लेफ्टिनेट अरुण क्षेत्रपाल (परमवीर चक्र) ने जनरल साहब के आदेशों की पालना करते हुए गजब की बहादुरी दिखाई। इस युद्ध के दूसरे योद्धा रहे उनके मातहत ए.बी. तारपोरे। पूना होर्स व उसके सेनानायक हनूतसिंह जसोल के नेतृत्व एवं युद्ध कौशल से प्रभावित हो पाक की सेना ने इस रेजिमेन्ट को 'फक्र-ए-हिन्द' के टाइटल से नवाजा जो कि भारतीय सेना को इतिहास में पहली बार किसी विरोधी सेना द्वारा अलंकृत किया गया। आपने इस मोर्चे पर बसन्तर नदी को पार करने से पूर्व जो लैण्ड माइन फिल्ड को सफलतापूर्वक पार किया वह तो साक्षात आध्यात्म गुरु कृपा का ही परिणाम था। परम विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित जनरल हनुत का रण कौशल, रणनीति, रजपूती, गुरु भक्ति, आस्था, आश्चर्यजनक वीरता, कर्तव्य परायणता, नेतृत्व क्षमता का जवाब नहीं था। 1971 के युद्ध में भारत सरकार ने आपको महावीर चक्र से सम्मानित किया। आप ही की रणनीति के कारण भारतीय सेना ने लाहौर को घेर लिया था। जनरल हनुत जैसे ब्रह्मचारी, सन्तात्मा, शूरवीर सेनानायक, इष्ट व गुरु भक्ति के धनी रणबंके राठौड़ क्षत्रिय पर समाज ही नहीं भारत वर्ष का गर्व है।

उच्च प्रशिक्षण शिविर बांसवाड़ा का स्नेहिल निमंत्रण

अठै पधारो आप
जठै सुरगधर ही जचै, अपणायत अणमाप।
मन रीझै हद मोकलौ, अठै पधारो आप।।

***

पळकै नित री पाडियां, रूंख करे है जाप।
धरा धीर अर धरम री, अठै पधारो आप।।

***

मिळसी सांप्रत मावड़ी, बैठो नेही बाप।
सगळा साथी आवसी, अठै पधारो आप।।

***

अनुभव मिळसी ओपतो, जीव जायसी धाप।
जगत काटसी सब जडां, अठै पधारो आप।।

***

भ्रम मिटैला भौम रा, होसी तृष्णा साफ।
दीप प्रेम रा दीपसे, अठै पधारो आप।।

***

जुगां जुगां रो जीव औ, नभ नै लैसी नाप।
अपणी बात बतावसी, अठै पधारो आप।।

***

वीणा सूती वेदना, फट बढ़ जासी ताप।
कुळ रो राखण कायदो, अठै पधारो आप।।

***

जाचक री सैं जाचना, करुण रिदै सूं कांप।
सुपनां रो मग साधसी, अठै पधारो आप।।

***

प्रांगण पावन फूटरौ, करै कैक संताप।
पथिकां नै पौरावतो, अठै पधारो आप।।

***

मुरधर म्हारी मावड़ी, अपणी राग अलाप।
आंख्यां जोवै बाटड़ी, अठै पधारो आप।।

कमल सिंह 'सुल्ताना'

'समाज की बात करते हिचकें नहीं'

(पृष्ठ एक का शेष)

चित्तौड़गढ़

जातियों को मिटाने की बात अव्यवहारिक है। आदि काल से जातियां बनी हुई हैं, इस वास्तविकता को स्वीकार न करना मूढ़ता है। जाति हमारी पहचान है इसलिए गुमराह न हों। हमारे समाज को मजबूत करने में संलग्न होवें लेकिन किसी के साथ भेदभाव न करें। किसी जाति का विरोध न करें। राजपूत वह होता है जो मकान बनाने से पहले सोचता है कि इससे किसी को असुविधा तो नहीं हो रही है, यदि ऐसा हो तो कुछ इधर-उधर कर लेता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ राजपूत जाति के नाम पर कोई संदेश देने से झिझकता नहीं है लेकिन तोड़फोड़ के किसी आंदोलन का साथ भी नहीं देता। सात्विक लोगों सम्पर्क बनाया है, भीड़ में घुसकर सम्पर्क बनाया है। कौम के हित की बात जहां तक मेरी पहुंच है, पहुंचाता हूं लेकिन किसी अन्य को नुकसान पहुंचाने वाले मुद्दों में साथ नहीं देता। मेरा कोई स्वार्थ नहीं इसलिए कोई मेरा क्या बिगाड़ेगा लेकिन यदि समाज हित की मैं बात नहीं करता हूं तो सामाजिक चिंतन वाला व्यक्ति नहीं हूं। स्वामी जी के निर्देशानुसार कोई और तैयार हो जाएगा तो मैं छोड़ दूंगा लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता अंतिम सांस तक यही काम करने की इच्छा है। ऐसा मानता हूं कि मैं यदि समाज के हित की बात नहीं करता हूं तो धोखा हो जाएगा इसलिए संलग्न हूं। इन चुनावों में समाज के

बाड़मेर

का संगठित होना आवश्यक और संघ इसी क्रम में कार्यरत है। कोई जाति अच्छी या बुरी नहीं होती बल्कि ये दो प्रवृत्तियां है जो किसी भी जाति में हो सकती है। राजनीति में कोई विशेष रुचि नहीं लेकिन मेरे गुरु स्वामी अड़गाड़ानंद जी का आदेश है कि समाज का काम करते हो तो राजनीति के बीच रहना है लेकिन लिप्त नहीं होना। पूज्य तनसिंह जी ने मेरे जीवन को मोड़ा, गढ़ा लेकिन वृद्धावस्था में प्रत्यक्ष मार्गदर्शन की आवश्यकता ने मुझे स्वामी जी का सानिध्य दिलाया। उनका स्पष्ट निर्देश है कि राजनीति पर नजर हमेशा बनाए रखनी है और जिस दिन तक अपना स्वार्थ छोड़कर सब पार्टियों में समान संपर्क रखने वाला कोई दूसरा व्यक्ति नहीं मिलता तब तक निरन्तर काम करना है। कभी डरना मत, कोई बुलाए तो मिल लेना और जरूरत लगे तो स्वयं चलाकर मिल लेना लेकिन दूर मत होना। तब से सभी राजनीतिक पार्टियों में तीन-तीन लोगों को दोनों पार्टियों से टिकट मिले हैं। ये सभी 6 लोग जीतें इसके लिए प्रयत्नशील हूं और इसी क्रम में आज जोधपुर आया हूं। मैं संसार की बात नहीं करता, मेरा संसार छोटा है, कौम तक सीमित है इसलिए छः की ही बात कर रहा हूं। सभी जगह एक ही संदेश दे रहा हूं कि हम मजबूत होंगे तो देश मजबूत होगा और हम मजबूत तब होंगे जब साथ रहेंगे। कुछ लोग राजनीतिक पार्टियों में मेरे बारे में कहते हैं कि इनके पास क्या सामान है तो वास्तव में कोई सामान नहीं है, लेकिन कौम की बात करता हूं यही सामान है और इसी के बल पर बात करता हूं। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि यह चुनावी सभा नहीं है लेकिन चुनाव का वक्त है इसलिए स्वामी जी के आदेशानुसार आपसे आह्वान करता हूं कि आपके यहां से गजेन्द्रसिंह को शत प्रतिशत एवं एकतरफा मतदान कर जिताएं। मेरी मित्रता माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से भी है। पूर्व मुख्यमंत्री माननीया वसुंधरा जी से भी सम्पर्क है और अन्यों से भी रखता हूं लेकिन वे मेरी भावनाओं को जानते हैं कि मैं कौम का सिपाही हूं इसलिए कौम के व्यक्ति के साथ खड़ा हूं चाहे वह किसी भी पार्टी का हो। समाज के काम के लिए समाज के लोगों को आगे बढ़ाने के लिए दोनों से मिलता हूं। कुछ लोग चुनाव को युद्ध की संज्ञा देते हैं। इसलिए रणनीति शब्द का उपयोग करते हैं लेकिन मेरे अनुसार यह रण ही नहीं है तो कैसी रणनीति? ये चुनाव न युद्ध है और न ही खेल है। चुनाव है श्रेष्ठ लोगों का चयन करें। मेरा मानना है कि शासन चलाने में, व्यवस्था बनाने में राजपूत से श्रेष्ठ कोई नहीं,

बालोतरा

इसलिए हमारे सभी लोगों को जिताएं। कुछ लोग कहते है कि पार्टियां हमारी मां हैं तो लोग पार्टियां रोज बदलते रहते हैं। मां बदली नहीं जाती इसलिए मां पार्टी नहीं है बल्कि यह कौम हमारी मां है, यह राष्ट्र हमारी मां है। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि हम अन्य जातियों का सम्मान न करें, उनके साथ अच्छा व्यवहार न करें। रजपूती का अर्थ ही सबका सम्मान और सबका पालन है और यह प्रवृत्ति मजबूत हो इसलिए राजपूत का आगे आना आवश्यक है और इसीलिए आह्वान कर रहा हूं कि यहां से गजेन्द्रसिंह को जिताएं, बाड़मेर से मानवेन्द्रसिंह को जिताएं और इसी प्रकार चित्तौड़गढ़,

बेलवा

राजसमंद, अलवर, जयपुर ग्रामीण में खड़े राजपूतों को जिताएं। यदि हम पार्टियों के बंधुआ रहे तो वे हमारे साथ मजदूर का सा व्यवहार करेंगी इसलिए पार्टी से नहीं समाज से बंधे क्यों कि मतदाता की कोई पार्टी नहीं होती। सदाशयता,सदाचरण एवं समादर के साथ मतदान करें।

इससे पूर्व माननीय संघ प्रमुख श्री 19 अप्रेल को चित्तौड़गढ़ लोकसभा क्षेत्र में पधारे एवं वहां निंबाहेड़ा व चित्तौड़गढ़ राजपूत छात्रावास में समाज बंधुओं के साथ बैठक की। वहां उन्होंने कहा कि चित्तौड़गढ़ लोकसभा क्षेत्र में सर्वाधिक राजपूत मतदाता हैं और वर्षों बाद राजपूत को टिकट मिला है इसलिए सब मिलकर गोपालसिंह ईडवा को जिताएं। 22 अप्रेल को बालोतरा राजपूत छात्रावास में समाज बंधुओं से बैठक की। 23 अप्रेल को बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में बैठक रखी गई। 24 अप्रेल को प्रातः 11 बजे रामगढ़ (जैसलमेर) के राजपूत छात्रावास एवं सायं 5 बजे जवाहिर राजपूत छात्रावास में बैठक की। इन चारों बैठकों में माननीय संघ प्रमुख श्री ने किसी भी समाज, जाति या पार्टी से वैरभाव पैदा किए बिना हमारे समाज के प्रत्याशी मानवेन्द्रसिंह को जिताने की अपील की। श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के यशवर्धन सिंह झरेली, आजादसिंह शिवकर भी इन बैठकों में साथ रहे। इन सभी बैठकों में माननीय संघ प्रमुख श्री के उद्बोधन के पश्चात् चुनाव को लेकर कार्य योजना बनाई गई। हमारे प्रत्याशी के पक्ष में सभी समाजों से सहयोग लेने की चर्चा की गई। 25 अप्रेल को पोकरण के दयाल राजपूत छात्रावास, देचू के आदर्श महाविद्यालय एवं बेलवा (रावलगढ़) के माजीसा मंदिर में बैठकों का आयोजन किया गया। सभी जगह समाज के प्रत्याशी के पक्ष में अधिकतम मतदान का आह्वान किया गया।

संपादकीय Column

'वैज्ञानिकता को आहत करती श्रेष्ठता नेष्ठता'

एक मित्र अक्सर एक घटना सुनाया करते हैं। एक बार उनके दादोसा के पास उनके गांव के चर्मकार समाज के युवा ने आकर पूछा कि उनका एमबीबीएस हो गया है अब उन्हें विशेषज्ञता के लिए किस क्षेत्र को चुनना चाहिए? दादोसा ने उनसे कहा कि आप अन्यथा न लेना लेकिन मेरी सलाह है कि आपको चर्मरोग विशेषज्ञ बनने के लिए आगे की पढ़ाई करनी चाहिए। उन्होंने दादोसा की सलाह मानी और आज वे चर्मरोग के अच्छे विशेषज्ञ माने जाते हैं। यह है हमारी जाति व्यवस्था की वैज्ञानिकता। हमारे भारत वर्ष में जो भी व्यवस्थाएं पनपी वे सदियों के शोध के बाद सदी दर सदी परिमार्जित एवं परिष्कृत होकर पनपी और वैसी ही व्यवस्था है जाति व्यवस्था। आधुनिक विज्ञान जिस डीएनए की बात करता है, गुण सूत्रों की बात करता है, वंशानुक्रम की बात करता है और इन सबके कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव की बात करता है उन्हीं सब बातों का समावेश कर पीढ़ी दर पीढ़ी, सदी दर सदी के परिमार्जन से जन्मना जातीय व्यवस्था का स्वरूप उभरा। समाज में विभिन्न कामों को करने के लिए भिन्न-भिन्न समूह बने और पीढ़ी दर पीढ़ी करते-करते उन कामों में विशेषज्ञता हासिल होने लगी। इसी कारण इसके जन्मना स्वरूप को स्वीकारा गया। लेकिन इसे यह स्वरूप देने वाले लोगों ने कभी यह नहीं सोचा होगा कि कोई कार्य भी कभी श्रेष्ठ या नेष्ठ होगा? उनकी नजर में कार्य तो मात्र कार्य था और उसे पूजा समझ करने का भाव था इसीलिए तो कहा गया कि कार्य ही पूजा है। लेकिन कालांतर में व्यवस्थाकारों की पीढ़ियों में आई विकृति ने इस वैज्ञानिक व्यवस्था को श्रेष्ठता और नेष्ठता के खांचे में बांट दिया। एक कार्य श्रेष्ठ माना जाने लगा और दूसरा नेष्ठ। व्यक्ति निवृति के पश्चात अपने हाथ धोता है उसे तो नेष्ठ नहीं माना गया लेकिन सम्पूर्ण समाज के हाथ धोने वाले को नेष्ठ मान लिया गया। छोटे बच्चे के मल को साफ करने वाली स्त्री को तो मां का स्वरूप देकर पूजनीय माना गया, उसके त्याग को सराहा गया लेकिन वह काम सम्पूर्ण समाज के लिए करने वाले वर्ग को नेष्ठ बना दिया गया। बुद्धि की प्रधानता ने श्रम को हेय मानकर उसे छोटा एवं स्वयं को बड़ा सिद्ध कर दिया। जरा विचार करें कि हमारा शरीर कर्म प्रधान है, शरीर के बाह्य अंग बुद्धि के निर्देशन में श्रम करते हैं तो क्या हमारे लिए हमारा मुंह हमारी बुद्धि की अपेक्षा नेष्ठ है? माथे क्या हमारा हाथ हमारे सिर की अपेक्षा नेष्ठ है? निश्चित रूप से नहीं है लेकिन यह भारतीय समाज का दुर्भाग्य रहा कि उसके द्वारा सदियों के परिष्करण द्वारा विकसित की गई वैज्ञानिक समाज व्यवस्था में चंद स्वार्थी लोगों ने श्रेष्ठता एवं नेष्ठता का घुण लगा दिया। वह घुण शनैः शनैः इस उत्कृष्ट व्यवस्था को खोखला करता रहा और परिणाम स्वरूप एक सुदृढ़ समाज कमजोर हो आक्रांताओं के आक्रमण का शिकार बना। चंद लोगों के व्यक्तिगत अहंकार एवं स्वार्थ ने मानव-मानव में भेद करने की अमानवीय वृत्ति को जन्म दिया और परिणाम स्वरूप इस श्रेष्ठ भारत में, कण-कण में परमेश्वर का दर्शन पाने वाले भारत में व्यक्ति के अहंकार को जातीय स्वाभिमान बनाकर अपने ही अंग को श्रेष्ठ या नेष्ठ मानने के लिए प्रेरित किया। कालांतर में यह श्रेष्ठता नेष्ठता का भाव व्यवस्थाकारों द्वारा प्रमाणिक बना दिया गया और इसे ही व्यवस्था मान लिया गया। जब विकृति को ही व्यवस्था मानकर व्यवस्था ही उस विकृति की रक्षा करने लगे तब जो हाल होता है वही भारतीय समाज व्यवस्था का हुआ। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आज भी हम श्रेष्ठता नेष्ठता के इस चंगुल से मुक्त नहीं हो पा रहे। जातियों का आधार क्यों कि वैज्ञानिक है इसलिए इनको मिटाया नहीं जा सकता। विभाजन पूरे संसार में रहा है, रह रहा है और आगे भी रहेगा। तथाकथित विकसित व्यवस्थाएं भी शनैः शनैः उधर ही बढ़ेंगी इसलिए जाति को मिटाने का नारा किसी भी दृष्टिकोण से व्यवहारिक नहीं है। यदि व्यवहारिक होता तो भारत की आजादी के बाद से ही लगातार यह नारा देने वाले राजनेता जाति को ही अपनी राजनीति का आधार नहीं बनाते। लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि जाति व्यवस्था का वर्तमान विकृति विहीन है। श्रेष्ठता नेष्ठता का भाव ही इस व्यवस्था की सबसे बड़े विकृति है। इस विकृति के कारण ही जातियां स्वाभिमान के नाम पर अहंकार के पोषण का आधार बनती जा रही है। हर जाति दूसरी से अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करने की होड़ में संलग्न है और इसी संलग्नता के कारण जातीय संघर्ष पनपा है। हर तरफ अखाड़े सजे हुए हैं और इन अखाड़ों में हर जाति स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ सिद्ध करने को तत्पर है। जो अपने आपको श्रेष्ठ मानते थे वे अपनी श्रेष्ठता बरकरार रखने पर तुले हैं और जो कभी नेष्ठ बन गए थे उनका अहंकार अब अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करने की अंगड़ाई ले रहा है और इसी अंगड़ाई के परिणाम स्वरूप वे सत्ता, साधन और व्यवस्था के सहारे पूर्व में स्वयं को श्रेष्ठ मानने वालों को नेष्ठ सिद्ध करने को तत्पर हैं और प्रायः हमें सामाजिक समरसता के इस प्रकार भंग होने के उदाहरण देखने सुनने को मिलते रहते हैं। हमें परमेश्वर ने क्षत्रिय के घर जन्म दिया है। भारतीय समाज व्यवस्था में हमें समाज को दिशा देने का काम दिया गया। हमारे महान पूर्वजों ने समय-समय पर इस काम को बखूबी पूरा कर जनमानस में सम्मान हासिल किया। विकृतियों का विनाश करने का दायित्व हमें सौंपा गया था और हमने सदैव आंतरिक एवं बाह्य विकृतियों से संघर्ष कर अपना दायित्व निभाया। आज भी इस श्रेष्ठता नेष्ठता की विकृति का विनाश कर सम्पूर्ण समाज को दिशा देने का दायित्व हमारा ही है। इसके लिए आवश्यक है कि सर्वप्रथम हमारा यह भाव तिरोहित हो कि अन्य हमारे से नेष्ठ है। हम अपने आपको श्रेष्ठ माने इसमें कोई विशेषता नहीं है बल्कि विशेषता यह है कि दायित्व निर्वहन करने पर जनमानस स्वतः स्फूर्त रूप से हमें पूर्व की भांति सम्मान देने लगे और ऐसा विकृति के विनाश में अग्रणी भूमिका निभाने में ही होगा। इसलिए आए हमारे भीतर व्याप्त श्रेष्ठता नेष्ठता के भाव को तिरोहित कर सम्पूर्ण मानव जाति को परमेश्वर की संतान के रूप में सम्मान करना सीखे और साथ ही माननीय संघ प्रमुख श्री की भाषा में पायोनियर बनकर सम्पूर्ण सृष्टि को दिशादर्शन देते हुए विकृतियों का विनाश कर भारतीय समाज व्यवस्था की वैज्ञानिकता को प्रतिष्ठापित करें।

खरी-खरी...

आत्मघाती आह्वान है 'मतदान बहिष्कार'

संसार में सभी प्रकार के भौतिक संघर्ष सत्ता के संघर्ष है। प्राप्ति के संघर्ष हैं। हर भौतिक प्राप्ति में सत्ता, पद, प्रतिष्ठा एवं धन संपत्ति सहायक होती है। भौतिक प्राप्तियों से इतर आध्यात्मिक प्राप्तियों में भी कई बार ये सहायक होती है तो कई बार बाधक बन जाती हैं। निवृत्ति मार्ग जहां सभी प्रकार के भौतिक साधनों की निपट उपेक्षा करता है वहीं प्रवृत्ति मार्ग इन सबके बीच से होकर गुजरता है। क्षत्रिय का मार्ग प्रवृत्ति का मार्ग है। क्षात्र धर्म संसार से होकर संसार से पार जाने का मार्ग है इसलिए क्षात्रधर्म राजनीति, अर्थनीति, समाज नीति आदि किसी भी भौतिक व्यवस्था की उपेक्षा नहीं कर सकता। वर्तमान समय में लगभग सम्पूर्ण विश्व में लोकतांत्रिक व्यवस्था कार्यरत है। इस व्यवस्था में जनता स्वयं अपना शासक चुनती है। सत्ता के चयन के उसके पास विकल्प होते हैं और उस चयन का माध्यम उसके पास मतदान है। हर राष्ट्र में किसी न किसी रूप में मतदान की व्यवस्था। हमारे राष्ट्र में भी राजा मत की पेटी से निकलता है। राज में भागीदारी का एक मात्र माध्यम मत द्वारा सत्ता को बनाना या मिटाना है। यदि हम इस बनाने और मिटाने की व्यवस्था में बने रहना चाहते हैं तो मतदान आवश्यक है। यदि हम व्यक्तिगत रूप से सत्ता के कारण होने वाले लाभों की निपट उपेक्षा कर विशुद्ध रूप से क्षात्रधर्म के पालनार्थ सात्विक त्याग के मार्ग पर बढ़ना चाहते हैं तो भी सत्ता की उपेक्षा नहीं कर सकते क्योंकि क्षात्रधर्म के पालन के साधनों में से एक महत्त्वपूर्ण साधन सत्ता है। सत्ता प्रभाव पैदा करती है और प्रभाव ही लोक संग्रह का माध्यम बनता है। इसलिए यह ध्रुव सत्य है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदान सत्ता में भागीदारी का सर्वाधिक प्रबल माध्यम है। इस व्यवस्था में जो कौमें मत के बल पर इधर से उधर करती है वे जिंदा कौमें कहलाती है ऐसे में मतदान का बहिष्कार करना आत्मघाती कदम है। युद्ध के मैदान में यदि सेनाएं आमने-सामने खड़ी हो और उस समय सैनिक कहें कि मैं तलवार का बहिष्कार करता हूं तो ऐसे सैनिक को क्या कहा जाएं? वही विशेषण मतदान बहिष्कार का आह्वान करने वालों के लिए हो सकता है। मतदान बहिष्कार के बहुत कम उदाहरण हैं इस राष्ट्र में और जो भी है वे बहुत छोटे स्तर पर ही अपेक्षित समस्या की ओर मात्र ध्यान आकर्षित करने में सफल हुए हैं शेष सभी तो आत्मघाती ही रहे हैं। इस आह्वान के आत्मघात का एक प्रभावी उदाहरण चुरु लोकसभा क्षेत्र का है जब कांग्रेस से जयसिंह राठौड़ लोकसभा प्रत्याशी के रूप में खड़े हुए थे। राजपूत बहुल एक गांव ने कुछ लोगों के बहकावे में आकर मतदान बहिष्कार का निर्णय लिया। उस गांव के लगभग 700-800 वोट राजपूतों के थे। उन्होंने विरोधियों के बहकावे में आकर मतदान का बहिष्कार किया और जयसिंह मात्र 167 वोटों से चुनाव हार गए। विचार कीजिए उन 700-800 राजपूत वोटर्स का मतदान बहिष्कार चुरू में राजपूत के लिए कितना अधिक आत्मघाती हुआ। इस बात को इससे समझ सकते हैं कि इसके बाद चुरु से लोकसभा की हमारे समाज की दावेदारी ही नेपथ्य में चली गई। एक लोकसभा सीट से हमारे अवसर सदा-सदा के लिए कुंद हो गए। इसलिए क्षणिक भावनाओं के आवेश में उठाए आत्मघाती कदम परिणाम में पछतावे के अलावा कुछ नहीं छोड़ते। ऐसा ही विश्लेषण हम नोटा का कर सकते हैं जब तक कि वह चुनाव परिणामों को प्रभावित करने जितना प्रभावी नहीं बन जाता। भावनाएं श्रेष्ठता की प्रतीक हैं। हृदय मनुष्य का सर्वाधिक प्रभावी साधन है लेकिन भावनाओं को बुद्धि का समर्थन हासिल होना आवश्यक है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	उ.प्र.शि.	18.05.2019 से 28.05.2019 तक	**लिटिल एंजल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल। कल्याणनगर, गनोड़ा (लांबापारड़ा) जिला-बांसवाड़ा।** शिविर स्थल उदयपुर रतलाम मार्ग पर उदयपुर से 125 किमी व रतलाम से 120 किमी दूर है। बांसवाड़ा से 35 किमी दूर है। गनोड़ा (लांबापारड़ा) के लिए जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, अहमदाबाद से सीधी बस सेवा उपलब्ध है। रेल सेवा के लिए उदयपुर या रतलाम रेलवे स्टेशन उतरें, वहां से बसें उपलब्ध हैं। शिविर स्थल गनोड़ा बस स्टैण्ड से 1 किमी दूर स्थित है। 18 मार्च को अपराह्न 12 बजे तक पहुंचना है। इस शिविर में 10वीं की परीक्षा दे चुके एवं 1 माप्रशि व 2 प्राप्रशि कर चुके शिविरार्थी ही शामिल हो सकेंगे। नीचे नोट में वर्णित गणवेश व सामग्री अनिवार्य रूप से लानी है। संघ साहित्य की झनकार, निर्देशिका एवं मेरी साधना पुस्तकें साथ लावें। **सम्पर्क सूत्र :** 94145-66796, 99835-65520, 95879-68610
2.	मा.प्र.शि. (बालिका)	31.05.2019 से 06.06.2019 तक	**जयमल कोट, पुष्कर (अजमेर)।** कम से कम 8वीं पास और पूर्व में शिविर की हुई बालिकाएं ही आ सकती हैं। गणवेश लेकर आएं।
3.	मिलन शिविर	07.06.2019 से 10.06.2019 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम, गेहूं रोड़, बाड़मेर। • आमंत्रित स्वयंसेवक ही आ सकेंगे। • आमंत्रित स्वयंसेवक पूरा शिविर न कर सकें तो कम-से-कम दो दिन के लिए आ सकते हैं।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

चन्द्रगुप्त मौर्य

सिकंदर के प्रत्यावर्तन के कुछ समय बाद ही भारतीय राजनीतिक रंगमंच पर एक ऐसे व्यक्तित्व का पदार्पण हुआ, जिसके व्यक्तित्व व कृतित्व ने इतिहास के पृष्ठों को सुनहरे रंग से रंग दिया, यह व्यक्तित्व था चन्द्रगुप्त मौर्य। चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म महात्मा बुद्ध के वंश 'शाक्य' वंश की एक शाखा मोरिय में हुआ था जो हिमाचल क्षेत्र में निवास करती थी। चन्द्रगुप्त के पिता एक ग्राम प्रमुख थे जो एक सीमान्त झगड़े में मृत्यु को प्राप्त हुए। पति की मृत्यु के बाद चन्द्रगुप्त की माता के लिए परिस्थितियां विपरीत और विकट हो गई थीं, इन कठिन परिस्थितियों में उन्हें चन्द्रगुप्त को एक गोपालक के यहां छोड़ना पड़ा। यह वह समय था जब भारत के पश्चिमोत्तर भाग पर यूनानी आक्रमण की शुरुआत हो रही थी। पश्चिमोत्तर भारत में छोटे-छोटे असंगठित राज्य थे जो विदेशी आक्रमण से रक्षा कर पाने में असमर्थ थे जबकि मगध का विशाल साम्राज्य भी पतनोंन्मुख था। मगध पर इस समय नन्द वंश का शासन था जिसके असीम लोभी, अत्याचारी, अयोग्य शासक धनानंद के कारण शासन व्यवस्था नष्ट होने के कगार पर थी। भारत पर मंडरा रहे इस विदेशी दासता के संकट से विचलित हो तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य चाणक्य भारतीय नरेशों से सहयोग के लिए घूम रहे थे। जब वो मगध की राजधानी पाटलीपुत्र पहुंचे तो उन्होंने पाया कि मगध सम्राट धनानंद तो भोग-विलास, रंगरेलियों में रत था। उसने चाणक्य की बात सुनने का भी प्रयास नहीं किया और चाणक्य को अपमानित कर दरबार से निकाल दिया गया। निराश व अपमानित चाणक्य जब वापिस लौट रहे थे तो मार्ग में उन्होंने चन्द्रगुप्त को अन्य चरवाहे बालकों के साथ एक खेल 'राजकीलम' खेलते देखा। चाणक्य के प्रज्ञा चक्षुओं ने बालक चन्द्रगुप्त में भावी सम्राट के गुण देख लिए। वे चन्द्रगुप्त को अपने साथ तक्षशिला ले आए और को शिक्षा दिलाने लगे।

सिकंदर के भारत से वापिस चले जाने के कुछ समय पश्चात् ही सिकंदर द्वारा विजित सिंध व पंजाब के प्रदेशों में घोर अराजकता व अव्यवस्था फैल गई। इस समय को चाणक्य व चन्द्रगुप्त ने यूनानियों को भारत से बाहर निकालने का एक उचित अवसर माना। चन्द्रगुप्त ने पंजाब के गणजातीय युद्ध प्रिय लोगों को एकत्र कर सेना का निर्माण किया। इस समय हिमालय क्षेत्र के एक शासक पवर्तक ने भी चन्द्रगुप्त का सहयोग किया। सेना के गठन के बाद चन्द्रगुप्त ने पंजाब से सिकंदर के क्षत्रपों को बाहर निकालने का अभियान छेड़ दिया। लगातार दो-तीन वर्षों तक कड़े संघर्ष के बाद चन्द्रगुप्त उन्हें भारत से खदेड़ने में कामयाब रहा। इस राष्ट्रीय युद्ध का अंत 317 ई.पू. में चन्द्रगुप्त द्वारा पश्चिमी पंजाब से सिकंदर के अंतिम क्षत्रप भुडेसम को पराजित कर भारत से बाहर निकालने पर हुआ। अब सम्पूर्ण सिंध और पंजाब पर चन्द्रगुप्त का अधिकार हो गया था। अब समय आ गया था मगध से अत्याचारी शासक धनानंद को उखाड़ फैंकने का। धनानंद को परास्त करने के लिए चन्द्रगुप्त ने मगध की राजधानी पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया। अपने इस प्रथम प्रयास में वह असफल रहा। दूसरे प्रयास में चन्द्रगुप्त ने पहले मगध के सीमावर्ती क्षेत्रों को जीता और फिर राजधानी पर आक्रमण किया। नन्दों व चन्द्रगुप्त के मध्य हुए इस युद्ध के बारे में अधिक विवरण नहीं मिला है परन्तु परवर्ती साहित्यकारों की रचनाओं के अनुसार यह युद्ध अत्यन्त भयंकर और रक्तरंजित हुआ। इस युद्ध में जहां चन्द्रगुप्त को युद्ध संबंध ब्यूह रचना में चाणक्य का सहयोग मिला वहीं धनानंद की ओर से यह कार्य उसके अमात्य राक्षस ने किया। लम्बे और कठिन संघर्ष के बाद चन्द्रगुप्त को युद्ध में विजय मिली और नन्दवंश के अंत के साथ मगध में एक नए राजवंश का उदय हुआ जो 'मौर्यवंश' के नाम से जाना गया।

(क्रमशः)

हृदय (चार)

श्री परमहंस आश्रम शक्तेषगढ़ की सायंकालीन सभा में भक्तों की जिज्ञासा पर कि, शरीर का वह कौन-सा अंग है जिसे हृदय कहते हैं, जिस हृदय में भगवान् का निवास होता है? - दिनांक 5 जून, सन् 2009 को पूज्य महाराजश्री का प्रवचन :

किन्तु किसी की स्मृति शुद्ध हो गई हो तो ?-

स्मृति उस समय पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाती है जब चित्त का निज स्वरूप शून्य हो जाता है। ध्येय लक्ष्यमात्र का आभास रह जाता है। यह निर्वितर्क समाधि की अवस्था है, बीज विद्यमान है। जब वितर्क अर्थात् कुछ संस्कार शेष ही नहीं है तो अब स्मृति-पटल पर उभरेगा क्या?

निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः।
(योगदर्शन, 1/47)

जब निर्वितर्क या निर्विचार समाधि अत्यन्त निर्मल हो जाती है, तब योगी में **'अध्यात्म प्रसादः'**- आत्मिक विभूतियां भली प्रकार प्रसारित हो जाती हैं। सनातन पुरुष अजन्मा, शाश्वत जिन विभूतियों वाला है, वह सारी विभूतियां योगी को प्राप्त हो जाती हैं, आत्मा का आधिपत्य स्थापित हो जाता है। आत्मिक विभूतियों का सारा प्रसाद उसे प्राप्त हो जाता है। अब कोई विभूति उससे अलग नहीं है।

उस समय बुद्धि ऋतुम्भरा होती है, ऋतुमती होती है। जैसे-खेत बुआई के लिए पूर्णतः तैयार है, बीज डालो जम जाएगा। ऋतम्भरा अवस्था उस ज्योतिर्मय परमात्मा को धारण करने की क्षमतावाली है, बुद्धि परमात्म-स्वरूप हो जाती है। इस ऋतम्भरा प्रज्ञा के भी अत्यन्त निर्मल होने पर-

तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधान्निर्बीजः समाधिः।
(योगदर्शन, 1/51)

वह ईश्वर मिलकर अपना सारा प्रसाद दे देता है। जब तक वह लेन-देन लगा है, तब तक कारण शरीर कार्य कर रहा है। जब वह ईश्वर भली प्रकार मिल गया, सारा संस्कार भी शांत कर देता है। यहां कारण शरीर भी शान्त हो गया। इस प्रकार संस्कारों के बीज का भी सर्वथा अभाव हो जाने पर इस अवस्था का नाम निर्बीज समाधि है। इसी को कैवल्य पद कहते हैं, कैवल्य ज्ञान कहते हैं। कैवल्य समाधि भी इसी का नाम है।

सारांशतः पहले स्थूल शरीर पंच महाभूतों से निर्मित यह पिण्ड है, जिसका हृदय यह दिल है जो धक-धक करता है। यह दिल जब कार्य करना बन्द करता है तो मौत होती है। यह शरीर मरता-जीता रहता है। **'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय'**- पुरुष पुराना वस्त्र त्यागकर जिस प्रकार नवीन वस्त्र धारण कर लेता है, ऐसे ही भूतादिकों का स्वामी जिस शरीर रूपी वस्त्र को त्यागता है, नवीन शरीर रूपी वस्त्र धारण कर लेता है, फिर उस नए वस्त्र में वह ज्यों-का-त्यों है। जो व्यवस्था वहां पर मिली थी, वह सब यहां पर विद्यमान है। उसने कुछ खोया ही नहीं। यह वस्त्र परिवर्तन का अनन्त सिलसिला चला आ रहा है।

गीता में भगवान् ने कहा- अर्जुन! शरीर नाशवान् है इसलिए तू युद्ध कर। तो क्या पाण्डव पक्ष के शरीर अविनाशी थे? इस आदेश से यह तो स्पष्ट होता नहीं कि वह केवल कौरवों को मारे। आधे रिश्तेदार पाण्डव पक्ष में भी खड़े थे। जहां भी शरीर दिखाई पड़े, चलाओ बाण! क्योंकि शरीर तो है ही नाशवान्।

यह भी तो प्रश्न अपनी जगह है कि शरीर मारने से क्या मर जाएगा? इधर शरीर छूटा, उधर दूसरा शरीर तैयार! एक वस्त्र बदला, दूसरा वस्त्र तैयार! जब तक अन्तिम संस्कार का अन्त नहीं हो जाता, तब तक शरीरों का क्रम अनवरत बना रहता है। अन्तिम संस्कार का मिटना, पुनः शरीर-निर्माण के कारणों का मिट जाना एक साथ घटित होता है। यही है शरीर का अन्त अर्थात् मन का निरोध और मन का अचल स्थिर ठहर जाना और शरीरों के पुनर्निर्माण के कारणों का समाप्त हो जाना एक साथ घटित होता है।

इसके साथ ही वह प्रभु आप में दृष्टि बनकर सञ्चारित हो जाएंगे, सामने तो स्वयं हैं ही। आप नहीं समझेंगे तब भी स्वतः समझ में आ जाएगा। इस प्रकार शरीर एक स्थूल वस्त्र है। इसके अन्दर एक सूक्ष्म शरीर है जिससे बार-बार शरीर मिलता है- वह है मन का संसार। इन्द्रिय और मन के संयम के पश्चात् सूक्ष्म शरीर का भी संयम हो जाता है, तब कारण शरीर दृष्टिगोचर होता है। सबका कारण है परमात्मा की वह प्रशक्ति जो सृष्टि का सञ्चालन करती है, अब वह आत्मा अपना प्रसाद प्रसारित करने लगती है, विभूतियों से अवगत कराने लगती है। देना-लेना लगा है तब तक तो वह साधक है। वह अवगत करा चुका तहां बुद्धि ऋत् से भर गई, परमात्मा को धारण करने की क्षमता आ गई। इसके भी शान्त होने पर कैवल्य ज्ञान, परमतत्त्व परमात्मा! इस गहराई में भगवान् का निवास है। इसी हृदय में भगवान् रहते हैं।

अर्थात् तीन शरीर हृदय में है। यह यौगिक है, योग के परिवेश में ये तीनों शरीर हैं- स्थूल शरीर मरता-जीता रहता है, इसमें भगवान् नहीं रहते। इसका यह आशय नहीं है कि वह स्थान भगवान् से रिक्त है। जिस प्रकार दूध में मक्खन या काष्ठ में अग्नि रहते हुए भी उपयोग के लिए प्रत्यक्ष नहीं है, उसी प्रकार इस स्थूल हृदय में रहते हुए भी भगवान् साक्षी मात्र है। यद्यपि साधना इसी के द्वारा संपन्न होती है- **'तन बिनु बेद भजन नहिं बरना।' (मानस, 7/95/5)**- यही शरीर है।

दूसरा है सूक्ष्म शरीर! एक भी संस्कार है, तब तक सूक्ष्म शरीर विद्यमान है- **'जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुंक पावहीं।' (मानस, 4/9 छन्द-2)**- पवन अर्थात् श्वास-प्रश्वास का गति का संयम कर श्वास में भले उद्वेग उठे तो वायुमंडल शुद्ध है, बुरे संकल्प उठे तो वायुमंडल गंदा है, शुभ और अशुभ श्वास की दो ही धाराएं चलती है। इस श्वास की गति रोककर अर्थात् मन में भले बुरे सङ्कल्प न उठें और न बाह्य सङ्कल्प भीतर प्रवेश कर पाए- इस प्रकार प्राणों को जीतकर मन और इन्द्रियों को निर्मल कर सतत् अभ्यास के फलस्वरूप मुनिजन भगवान् को ध्यान में पा जाते हैं-मन का निरोध करके, तन को निर्मल करके केवल एक शरीर से पार हुए।

मन और बुद्धि के निरोध के साथ ही सूक्ष्म शरीर समूल शान्त हो जाता है। चेतन आत्मा अपना परिचय देने लगती है। यह कारण शरीर भी परिचय देकर शान्त हो जाता है। वहां जो शेष बचता है वह है परमात्मा!

वैदिक वाङ्मय और औपनिषदिक साहित्य में **'अङ्गुष्ठमात्र पुरुष'** का वर्णन है, जिसका आशय प्रचलित है कि अंगूठे के आकार और परिणाम अर्थात् मात्र में भगवान् सबके हृदय में निवास करते है। कहा जा सकता है कि हाथी के हृदय में उसके अंगूठे के बराबर, चींटी में उसके अंगूठे के आकार का, किन्तु सर्प में? उसे तो अंगूठा होता ही नहीं! अणु-परमाणु से भी छोटे! बड़े से बड़े? वस्तुतः इन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ये जब सिमट जाए, योग के अंग-उपांग, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि सिमटकर वृत्ति शान्त प्रवाहित हो जाए, श्वास आई तो 'ॐ', गई तो 'ॐ', बीच में अन्य सङ्कल्पों का स्फुरण न हो- जिस समय यह संयम सधा, योग के अंग जब संगठित हुए, एक आशय है योग के अंग-प्रत्यंगों का सध जाना, गठित हो जाना।

वस्तुतः तीन शरीरों का विश्लेषण महापुरुषों की सूक्ष्म शोध है। जिन्होंने भगवान् को पाया इसी गहराई में पाया। इन्द्रियों के संयम के साथ ही स्थूल शरीर सध जाता है और साधक सूक्ष्म शरीर में प्रवेश कर जाता है। पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, तेजस और प्राज्ञ- इन सोलह तत्त्वों का सूक्ष्म शरीर है जो मन का संसार है। मन के निरोध के साथ ही सूक्ष्म शरीर भली प्रकार सध जाता है। संसार (माया) मन पर अंकित है। जिस धरातल पर माया काम करती है वह है मन! जब माया के ठहरने की जगह ही नहीं बची, **'मन मिटा माया मिटी, हंसा बेपरवाह।'**- इस मन के निरोध के साथ ही सूक्ष्म शरीर भी सध जाता है, तहां कारण शरीर जो इन सबका कारण है साधक के समक्ष आता है।

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं- आठ भेदोंवाली जड़ प्रकृति है, जीवात्मा मेरी चेतन प्रकृति है जो सबको धारण करके स्थित है। यही कारण है। सूक्ष्म शरीर के निरोध के साथ ही अर्थात् मन के निरोध के साथ ही वह कारण शरीर; परमात्मा की वह प्रशक्ति जो सबको धारण कर स्थित है, भली प्रकार परमात्मा का बोध करा देती है। प्रकृति से संबंध छूट चुका है, आत्मिक विभूतियों का बोध करा देती है- कैसे कण-कण में व्याप्त है, कैसे ज्योतिर्मय है, कैसे काल से अतीत है?- जब तक यह कार्य चलता है, वह कारण है और अन्तिम समाधान के साथ कारण शरीर भी शान्त हो जाता है। वहां जो शेष बचता है, वह केवल परमात्मा है।

यह साधनगम्य है। आप साधना में प्रवृत्त हो जाएं, एक-एक सोपान स्वतः पार होते चले जाएंगे। हमें करना कुछ भी नहीं है। जब तक भजन जागृत नहीं होता, तब तक हम प्रत्याशी हैं लेकिन किसी तत्त्वदर्शी सद्गुरु के सान्निध्य में गीतोक्त साधना पकड़ लेने पर, थोड़ा स्तर उठ जाने पर वह चेतन परमात्मा आपके मन, अन्तःकरण में जागृत होकर मार्गदर्शन करने लगता है। फिर उनके निर्देशन में चलना ही भजन है, योग-साधना है; और निर्देशन में चलते हुए उस परम का स्पर्श करते ही वह बताने वाला भी शान्त हो जाता है, केवल सहज स्वरूप रह जाता है। बुद्धि के अन्तराल में जो यह अगाधता है उसका नाम हृदय है; किन्तु यह जागृति किसी तत्त्वदर्शी महापुरुष द्वारा ही संभव है। इसकी सम्पूर्ण विधि 'गीता' है। 'गीता' संस्कृत में है जो आज जनसामान्य की भाषा नहीं रही। अतः इसे विधिवत् समझने के लिए इसकी व्याख्या 'यथार्थ गीता' का अनुशीलन करें। यही मानव का आदि धर्मशास्त्र है। इसी का विस्तृत वर्णन वेद इत्यादि समस्त शास्त्र हैं. विविध भाषा-शैलियों में सृष्टि के समस्त महापुरुषों की वाणियों में भी यही है। 'एक ईश्वर' जो भी कहते हैं, 'गीता' के ही संदेशवाहक हैं। ।।ॐ।।

(पृष्ठ एक का शेष)

सॉफ्ट टारगेट... कोई हमारे विरुद्ध षड्यंत्र कर सफल हो जाता है। क्या यह सब हमारी कमजोरी नहीं है? क्या यह हमारे धैर्य और दक्षता पर प्रश्न चिह्न नहीं है? हम कहते हैं कि लोगों ने हमारा उपयोग किया और आज भी कुछ अति महत्वांकाक्षी लोग हमारा किसी भावनात्मक अतिरेक में उपयोग कर लेते हैं तो क्या किसी षड्यंत्रकारी के षड्यंत्र के लिए साधन बन जाना हमारी कमजोरी नहीं है? वास्तव में विगत वर्षों का घटनाक्रम देखें तो हम षड्यंत्रकारियों के 'सॉफ्ट टार्गेट' बन गए हैं। हम युवाओं को दोष देते हैं कि वे भटक गए हैं लेकिन उनको भटकने से रोकने वाले क्या भटके हुए नहीं हैं? विचार करें कि क्या किसी के तुच्छ स्वार्थों के लिए उपयोग होना हमारे क्षत्रियत्व पर प्रश्न चिह्न नहीं है? इसलिए किसी भी बहकावे में आने से पहले, उकसावे में आने से पहले, षड्यंत्रों का मोहरा बनने से पहले, भावनाओं के दुरुपयोग से पहले जरा ठहर कर विचार कर लिया करें कि मैं क्षत्रिय हूं। षड्यंत्रकारी मेरे क्षत्रियत्व के उद्घोष से डरते थे, आज मैं उनका सरलतम लक्ष्य कैसे बन बैठा हूं? यदि यह प्रश्न जिंदा रहा तो हम उत्तर भी खोजेंगे।

(पृष्ठ चार का शेष)

आत्मघाती... इससे भी परिष्कृत बात यह है कि हृदय और बुद्धि दोनों का विवेक के अधीन होना आवश्यक है। अविवेकी की भावनाएं आत्मघाती होती है और ऐसी क्षणिक भावनाओं का परिणाम है मतदान बहिष्कार का आह्वान। हो सकता है कि ऐसे आह्वान को प्रकट करने का कारण आक्रोश का प्रकटीकरण हो लेकिन आक्रोश को प्रकट करने का यह उचित माध्यम नहीं है। हम सोचते हैं कि हम इस प्रकार इस रण से तटस्थ हो जाते हैं या जिन्हें पसंद नहीं करते उनको सजा दे रहे हैं लेकिन वास्तव में यह तटस्थता नहीं है और ना ही हम उनको सजा दे पाते हैं, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें हानि पहुंचाने की अपेक्षा लाभ ही पहुंचा देते हैं। वैसे भी तटस्थता नाम की कोई सत्ता नहीं होती। मनुष्य को कोई न कोई पक्ष चुनना ही होता है और तटस्थता भी उसके द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से किसी का पक्ष लेना ही होता है। इसलिए आए किसी भी प्रकार की तटस्थता, बहकावे या षड्यंत्रों से प्रभावित हुए बिना विवेकपूर्ण निर्णय लेते हुए इस लोकतांत्रिक समर में सक्रिय भागीदारी निभाएं एवं मतदान बहिष्कार जैसे आत्मघाती आह्वानों को दृढ़तापूर्वक नकारें।

राजस्थानी साहित्य की काळजयी कृति - हठीळो राजस्थान

श्रद्धेय आयुवानसिंह हुडील (1920-1967) आदर्श नेता, वाकपटु-विद्वज्ञ, श्रेष्ठ संचालक, क्रांतदर्शी विचारक-चिंतक होने के साथ हिंदी व राजस्थानी के उद्भट कवि-साहित्यकार थे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वे द्वितीय संघप्रमुख रहे तो भू-स्वामी आंदोलन के सूत्रधार भी। वे संघ में 'माड्साहब' के नाम से प्रसिद्ध थे। यद्यपि वे हिंदी व राजस्थानी साहित्य-जगत में अचर्चित रहे तथापि सामाजिक क्षेत्र में हजारों-लाखों लोगों के प्रेरणास्रोत हैं। श्रद्धेय आयुवानसिंह जी के जीवन का साहित्यिक पक्ष बहुत कम सामने आ पाया हैं। उनका साहित्य केवल क्षत्रिय समाज तक सीमित होकर रह गया। यदि उनका साहित्य हिंदी व राजस्थानी साहित्य के विराट फलक पर आता तो निःसंदेह वे आधुनिक काल के साहित्यकारों में अग्रगण्य होते। उनकी मानवीय-दृष्टि बारीकी से लोक-जीवन को देखती थी। एक ओर जहां उनकी कृति 'मेरी साधना' हिंदी गद्य की अनुपम कृति है। वहीं दूसरी ओर उनका 'ममता और कर्तव्य' कहानी-संग्रह कथ्य, भाव-भाषा व शिल्प की दृष्टि से मुंशी प्रेमचंदीय परंपरा से पाठक को जोड़ता है। 'हमारी ऐतिहासिक भूलें', राजपूत और भविष्य, राजपूत और जागीरें ये कृतियां उनकी सामाजिक चिंतन से ओत-प्रोत महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं।

राजस्थानी साहित्य के संदर्भ में देखा जाएं तो 'हठीळो राजस्थान' उनकी काळजयी कृति है। श्री हुडील की इस कृति में राजस्थान के इतिहास, संस्कृति, परंपरा, लोक-जीवन, आंचलिकता से संबंधित 360 दोहे हैं। प्रत्येक दोहे को कवि ने जिस तरह से लिखा है। आंखों के सामने तद् विषयक बिंब साकार हो उठते हैं। राजस्थानी व डिंगळ शब्दावली के समन्वय से उनकी भाषा ठीमर व ठसकदार बन गई है। कवि की कल्पनाशीलता अद्भुत है। साथ ही बहुज्ञता वरेण्य है। उनके कई दोहे तो लोक-जिह्वा पर हैं। यथा-

केसर निपजै नह अठै,
नह हीरा निकळंत।
सिर कटियां खग झालणा,
इण धरती उपजंत।।

कतिपय दोहे अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं-

धर कागद खग लेखणी, रगतां स्याही खास।
कमधां लिखियौ कोड सूं, अमिट धरा इतिहास।।

***

खल खंडण, मंडण सुजस, परम वीर परचण्ड।
तौ भुज-दण्डा ऊपरै, भारत करै घमण्ड।।

***

हरवळ रह नित भेजणा, चुण माथा हरमाळ।
बाजै नित इण देस रा, तो माथै त्रंबाळ।।

***

वो गढ़ नीचौ किम झुकै, ऊंचौं जस-गिर वास।
हर झाटै जौहर जठै, हर भाटे इतिहास।।

***

हठ करतौ हांचळ पकड़, लुक छिप खातो गार।
मायड़ फूलै देख नै, उण हाथां तरवार।।

***

सुत छोटो खोटो घणौ, बोलै निरभै बैण।
नाम चहै निज शत्रुवां, कर कर राता नैण।।

***

दो-दो लंगर पांव में, माथै दो-दो मोड़।
दो-दो खग धारण किया, रण-लाडो बेजोड़।।

***

सुत केसरिया धुज गही, धब केसरिया भेह।
धण केसरिया आग में, बाळी केसर देह।।

***

खग बावै भड़ एक हथ, बीजै हथ निज माथ।
सिव-धण पूछै पीव नै, किसो सराऊं हाथ।।

***

हेली! देखौ आज किम, अम्बर दीसै आग।
सुरगां पीव सिधावतां, जळद झकोळी खाग।।

***

खळहळ नाळा खळकिया, बिन पावस किम आज।
सिर कटियौ धर कारणै, धर रोवै सिर काज।।

***

आभै उतरी पीत पट, लाल नैण तन हार।
सोई रूठी भाम ज्यूं, झालर री झणकार।।

***

रोहीड़ै कलियौं खिली, रूड़ी रूप प्रवीण।
जाणै बहू बजार री, रूपाळी गुण हीण।।

***

कैर कुमटिया सांगरी, काचर बोर मतीर।
तीनूं लोकां नह मिलै, तरसै देव अखीर।।

***

पीळा जाळ सुहावणा, धरती पीळी रेत।
सखियां पीळा पट किया, सरसों पीळा खेत।।

***

बजै नगारा पीर नभ, मुख बीजळ मुसकान।
रिमझिम आभै ऊतरी, बिरखा बहू समान।।

***

इस तरह समग्र कृति का अध्ययन करने से ज्ञात होता हैं कि इस काव्य-कृति में राजस्थान के गौरवमय इतिहास, संस्कृति, प्रकृति, तीज-त्योंहार, जीवन-मूल्यादि का सांगोपांग निरूपण हुआ है। दोहा छंद में लिखी गई 'हठीळो राजस्थान' में श्रृंगार, वीर, वात्सल्यादि रसों की रसधार बहती प्रतीत होती है। वहीं इसमें ओज व प्रसाद-माधुर्य गुणों का सुंदर गुंफन हुआ हैं। राजस्थानी के प्रसिद्ध वयणसगाई अलंकार के साथ अनुप्रास, रूपक, उत्प्रेक्षा, यमक, विरोधाभास आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग श्रद्धेय हुडील को राजस्थानी साहित्य के हरावल दस्ते के कवियों में खड़ा करने हेतु पर्याप्त है। प्रकृति का मानवीकरण करने में भी हुडील को सिद्धहस्तता प्राप्त थी। बिंब, प्रतीक आदि के माध्यम से चित्रात्मकता का साकार रूप उनके दोहों में देखा जा सकता है। यद्यपि भाव, भाषा, शिल्प व कथ्य की दृष्टि से साहित्यिक संदर्भ में इस महनीय कृति का पूर्ण मूल्यांकन होना शेष है। समय के साथ उनकी रचनाएं यदि साहित्यिक-धरातल पर सामने आए तो शोध का नूतन अध्याय उद्घाटित होगा। नया सोपान बनेगा। वहीं लोक-मानस श्रद्धेय हुडील के रचनाकर्म से परिचित हो सकेगा। आशा हैं इस दिशा में नये प्रयास होंगे।

महेंद्रसिंह सिसोदिया 'छायण'

राजपूत प्रतिभा खोज परीक्षा 12 मई को

राजपूत शिक्षा कोष द्वारा वर्ष 2019 के लिए राजपूत प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन 12 मई को जोधपुर, पाली, बाड़मेर, जैसलमेर, सिरोही जिला मुख्यालयों पर प्रातः 11 बजे एक साथ आयोजित की जाएगी। इसमें कक्षा 6, 7, 8 व 9 के सजातीय विद्यार्थी परीक्षा दे सकेंगे। इस परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों को कक्षा 12 तक निःशुल्क शिक्षा कोष के खर्चे पर पढ़ाया जाएगा। विगत वर्ष ऐसे 11 छात्रों का चयन किया गया था

धर्मेन्द्रसिंह काणेटी को पितृशोक

संघ के स्वयंसेवक धर्मेन्द्रसिंह काणेटी के पिता **रणजीतसिंह खोड़ूभा** का देहवासन 8 अप्रैल 2019 को हो गया। भगवान इनकी आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

रणजीतसिंह

गंगासिंह साजियाली को पितृशोक

संघ के मेवाड़ क्षेत्र के केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली के पिता **पूंजराजसिंह भाटी** का 18 अप्रेल को देहावसान हो गया। भगवान इनकी आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

पूंजराजसिंह भाटी

दशरथसिंह सांपणदा का देहावसान

संघ के स्वयंसेवक **दशरथ सिंह सांपणदा** का 20.04.2019 को देहावसान हो गया। सितंबर 1958 में अरणिया प्रा.प्र.शि. से संघ के सम्पर्क में आए। दशरथसिंह ने अपने प्रारम्भ के दिनों में 5 उ.प्र.शि., 4 मा.प्र.शि. एवं 8 प्रा.प्र.शि. किए थे। भगवान इनकी आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

दशरथ सिंह सांपणदा

गोविंद सिंह पांचला को पितृशोक

संघ के युवा स्वयंसेवक गोविंद सिंह पांचला के पिता **हेमसिंह चौहान** का 18 अप्रेल को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता है।

हेमसिंह चौहान

आंइस्टीन को चुनौती देने वाला भारतीय गणितज्ञ

विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह एक महान गणितज्ञ हैं जिन्होंने अपनी चमत्कारिक बौद्धिक क्षमता से अनेक ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों को चकित कर दिया। यही नहीं आपने आंइस्टीन के सापेक्ष सिद्धान्त को भी चुनौती दी थी। उनके बारे में मशहूर है कि नासा में अपोलो की लांचिंग से पहले जब सभी 31 कम्प्यूटर्स कुछ समय के लिए बंद हो गए तो कंप्यूटर्स के ठीक होने पर पाया कि उनके द्वारा किए गए कैलकुलेशन और कंप्यूटर्स के कैलकुलेशन एक थे। चक्रीय सदिश समष्टि सिद्धान्त पर किए गए उनके शोध कार्य ने उन्हें विश्व में प्रसिद्ध कर दिया। डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह का जन्म 23 अप्रैल 1942 को बिहार के भोजपुर जिले के बसंतपुर गांव में हुआ था। इनका परिवार आर्थिक रूप से गरीब था। मेधावी छात्र वशिष्ठ ने अकादमिक क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित कर इस कहावत-'होनहार बीरवान के होत चिकने पात' को सही साबित कर दिया। वे जब पटना साइंस कॉलेज में पढ़ रहे थे तभी उनकी किस्मत चमकी और केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉन कैली की नजर उन पर पड़ी जिसके बाद 1965 में वशिष्ठ नारायण अमेरिका चले गए और वहीं से उन्होंने 1969 में पीएचडी की। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय बर्कले में उन्हें सहायक प्रोफेसर की नौकरी मिली। उन्हें नासा में भी अपनी सेवाएं देने का अवसर मिला। यहां भी डॉ. वशिष्ठ नारायण की विद्धता ने वैज्ञानिकों को हैरान कर दिया। बताया जाता है कि अपोलो की लांचिंग के समय अचानक कंप्यूटर्स ने काम करना बंद कर दिया, तो डॉ. वशिष्ठ ने कैलकुलेशन करना प्रारम्भ कर दिया जिसे बाद में

सही पाया गया। आज्ञाकारी पुत्र पिता के आदेशों की अनुपालना में स्वदेश लौट आया और प्रणय सूत्र में भी बंध गया, परन्तु होनी को कुछ और ही मंजूर था। 1973-74 में उनकी तबीयत बिगड़ी और पता चला कि उन्हें सिजोफ्रेनिया है। जिस पत्नी ने सात जन्म साथ निभाने का संकल्प किया था वो पति की बीमारी के कारण से एक जन्म भी साथ नहीं निभा पाई।

1976 में उन्हें उपचार के लिए रांची के अस्पताल में भर्ती करवाया गया, उसके उपरान्त कई जगह दिखाया गया। लेकिन परिवार वालों पर कष्टों का पहाड़ उस समय गिरा जब इलाज के सिलसिले में बाहर गए वशिष्ठ नारायण घर लौट रहे थे कि रात के अंधेरे में रेलगाड़ी से उतरे और जाने कहां चले गए। पांच वर्ष बाद शादी में गए गांव के कुछ लड़कों ने उन्हें सारण में देखा। परिवार वाले उन्हें घर लेकर आए। अगर उम्मीद का साया ओझल हो जाय तो जीवन बसर करना दुष्कर हो जाता है। आजकल वे पहले से बेहतर हैं इसलिए परिवार वालों को उम्मीद है कि एक दिन वो अवश्य पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाएंगे। सुख के लम्हों में वे उन साजो को छेड़ते हैं जो उनके दिमाग की नसों में सुकून का प्रवाह करते हैं। वशिष्ठ कभी-कभी तबला, बांसुरी और हॉर्मेनियम बजा अपने आपको संभालते हैं। चिकित्सकों के अनुसार घर के माहौल और बेहतर उपचार से वे ठीक हो सकते हैं। घर के वातावरण की बात तो समझ में आती है और संभव भी है और उपलब्ध भी कराई जा रही है। लेकिन इलाज कैसे और कहां से होता? जिस प्रतिभा को सरकार द्वारा सम्मानित किया जाना था वो आज उपयुक्त उपचार के लिए तरस रही है। सरकार और समाज की बेरुखी ने क्षुब्ध हो उनकी भाभी कहती है कि किसी नेता का कुत्ता बीमार पड़ जाए तो डॉक्टरों की लाइन लग जाती है परन्तु इनकी सुध लेने वाला कोई नहीं, किसी के कानों में कभी जूं भी नहीं रेंगती है। पिछले 44 साल से मानसिक बीमारी से पीड़ित एक दुर्लभ प्रतिभा (डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह) पटना के एक अपार्टमेन्ट में गुमनामी का जीवन जी रही हैं। अब भी किताब-कॉपीऔर एक पैंसिल उनकी सबसे अच्छी दोस्त है। आर्यभट्ट की इस जन्मभूमि पर रहने वाले वशिष्ठ बाबू पर भले ही विदेशी नहीं लेकिन किसी हमवतन की ही नजर पड़े और उन्हें भी वह जिंदगी और सम्मान मिले जिसके वे हकदार हैं। भारत के महान गणितज्ञ डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह के जीवन पर शीघ्र ही एक फिल्म बनने जा रही है।

कर्नल हिम्मतसिंह पीह

राजपूत शिक्षा कोष का प्रतिनिधि सम्मेलन

जोधपुर के ऐश्वर्या कॉलेज में 21 अप्रेल को राजपूत शिक्षा कोष का प्रतिनिधि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कोष के संस्थापक पूर्व आई.ए.एस. औंकारसिंह बाबरा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। ट्रस्ट के सचिव किशनसिंह द्वारा ट्रस्ट के कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया। राजपूत प्रतिभा खोज परीक्षा के समन्वयक श्यामसिंह सजाड़ा ने लाभान्वित विद्यार्थियों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई। पूर्व सांसद एवं संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव ने शिक्षा नेग की अवधारणा को स्पष्ट किया। ईश्वरसिंह खाराबेरा ने शिक्षा नेग के ग्यारह हजार एवं शंभूसिंह मेड़तिया ने इक्यावन हजार रुपए भेंट किए। जे.एन.यू.वी. के कुलपति गुलाबसिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

गंगाप्रसादी में यथार्थ गीता वितरित

बालेसर सत्ता (जोधपुर) में हिम्मतनगर निवासी पुण्यात्मा समद कंवर की गंगाप्रसादी में 15 अप्रेल को उनके पुत्र जोरसिंह, कल्याणसिंह, लखसिंह, रेवंतसिंह, किशोरसिंह, अर्जुनसिंह आदि ने अपनी माताजी की स्मृति में अपने रिश्तेदारों एवं शुभचिंतकों को 300 से अधिक यथार्थ गीता वितरित की। इस अवसर पर लोगों को बताया गया कि गीता जीवन जीने का राजमार्ग प्रदान करती है। यह विलक्षण ग्रंथ हताश, निराश एवं उदासीन मानवता को संजीवनी प्रदान करता है। ऐसे पारिवारिक कार्यक्रमों का इसे हिस्सा बनाकर हम अधिक से अधिक लोगों तक परमेश्वर के इस अमर संदेश को प्रसारित कर सकते हैं।

वीर कुंवर सिंह का 162वां विजयोत्सव मनाया

नई दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में 23 अप्रेल को भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक वीर कुंवर सिंह का 162वां विजयोत्सव मनाया गया। मॉरिशस के भारत में उच्चायुक्त जगदीश गोवर्धन, एनडीएमसी की सेक्रेटरी रश्मिसिंह, प्रसिद्ध लोक गायिका पद्मश्री मालिनी अवस्थी एवं वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री राम बहादुर के आतिथ्य में आयोजित इस समारोह में बाबू कुंवरसिंह के शौर्य एवं मातृभूमि के प्रति उनके अगाध प्रेम का उल्लेख किया गया। उनके द्वारा अंग्रेज सेना को खदेड़कर अपने राज्य को कायम रखने की चर्चा करते हुए उनके साहस एवं त्यागपूर्ण जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही गई। कार्यक्रम का आयोजन वीर कुंवर सिंह फाउंडेशन के तत्वावधान में हुआ।

रामनवमी पर चिंतन बैठक

गुजरात के सौराष्ट्र में राणोजी के गढ में श्री हरिसिंह गढुला चेरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में रामनवमी के अवसर पर 'राम और राम के वंशज हम' विषय पर चिंतन बैठक का आयोजन किया गया जिसमें राजकोट, जूनागढ़, भावनगर, सुरेन्द्रनगर से समाज बंधु उपस्थित हुए। चिंतन बैठक में मुख्य वक्ता अजय जी ने कहा कि क्षात्र धर्म के पालनार्थ शासक होना आवश्यक नहीं है। वनवासी राम ने अपने चरित्र के बल पर वनवास के समय वनवासी जातियों का लोकसंग्रह कर क्षात्र धर्म का पालन किया। उन्होंने ना ही अयोध्या से सहायता मांगी एवं ना ही जनकजी से सहायता मांगी। हमें उनसे प्रेरणा लेकर अपने चरित्र के बल पर लोगों को जोड़कर क्षत्रियत्व की ओर अग्रसर होना चाहिए। यज्ञ के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ एवं दोपहर के भोजनोपरांत समापन हुआ।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org